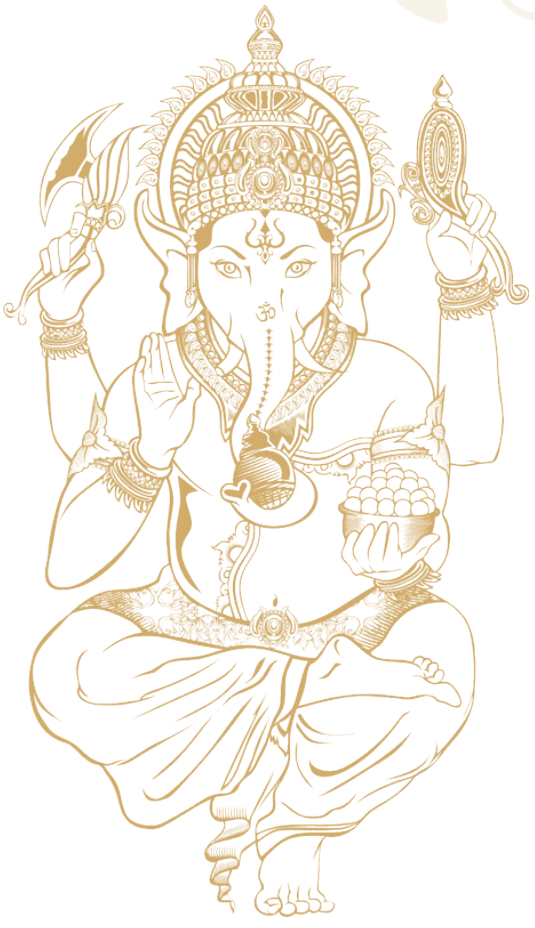

Mr. Pragun

Khyati

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120596103

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
01/01/1997	जन्म तिथि	15/11/1999
बुधवार	दिन	सोमवार
घंटे 17:35:00	जन्म समय	19:21:00 घंटे
घटी 25:51:53	जन्म समय(घटी)	31:33:38 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Delhi
28:39:00 उत्तर	अक्षांश	28:39:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व	रेखांश	77:13:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08	स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
07:14:14	सूर्योदय	06:43:32
17:35:22	सूर्यास्त	17:27:41
23:48:56	चित्रपक्षीय अयनांश	23:51:04

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
चन्द्र 9वर्ष 3मा 7दि	18:08:07	मिथु	लग्न	वृष	29:30:15	चन्द्र 2वर्ष 7मा 20दि
राहु	17:18:19	धनु	सूर्य	तुला	28:53:49	राहु
10/04/2013	10:58:22	कन्या	चंद्र	मक	19:48:48	06/07/2009
11/04/2031	05:35:19	कन्या	मंगल	धनु	27:59:56	07/07/2027
राहु 22/12/2015	18:37:07	धनु व	बुध व	तुला	29:42:13	राहु 18/03/2012
गुरु 17/05/2018	01:28:13	मक	गुरु व	मेष	03:11:37	गुरु 12/08/2014
शनि 23/03/2021	25:15:39	वृश्चि	शुक्र	कन्या	13:07:14	शनि 18/06/2017
बुध 10/10/2023	07:32:44	मीन	शनि व	मेष	19:07:36	बुध 05/01/2020
केतु 28/10/2024	08:37:19	कन्या	राहु	कर्क	12:50:55	केतु 23/01/2021
शुक्र 28/10/2027	08:37:19	मीन	केतु	मक	12:50:55	शुक्र 24/01/2024
सूर्य 21/09/2028	09:28:54	मक	हर्ष	मक	19:14:33	सूर्य 17/12/2024
चन्द्र 23/03/2030	03:01:53	मक	नेप	मक	08:01:51	चन्द्र 18/06/2026
मंगल 11/04/2031	10:35:15	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	15:49:12	मंगल 07/07/2027

लग्न-चलित

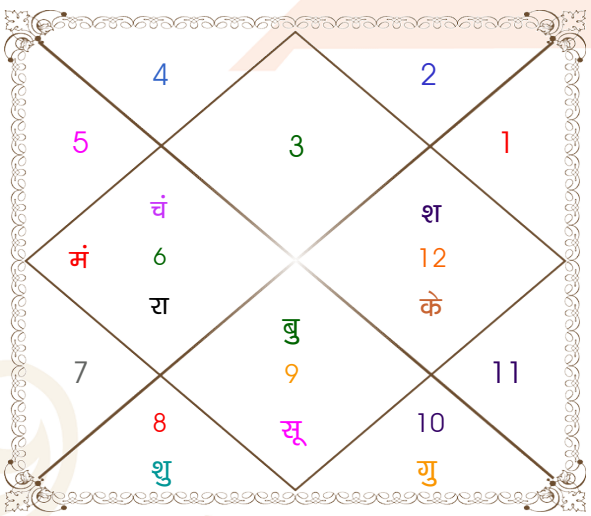

लग्न-चलित

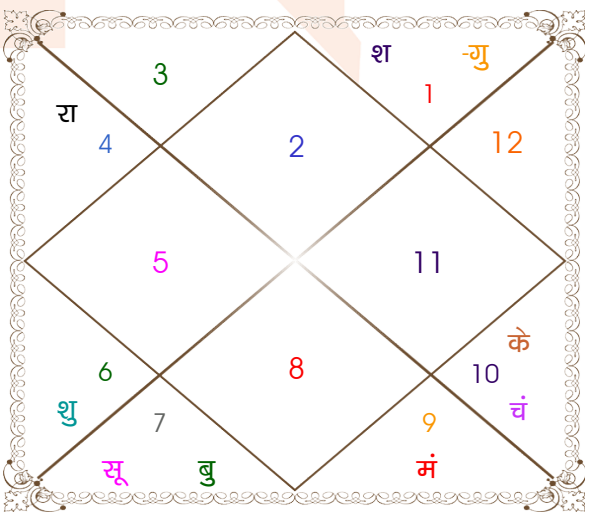

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	जन्म	जन्म	3	3.00	--	भाग्य
योनि	महिष	वानर	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	बुध	शनि	5	4.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	देव	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	कन्या	मकर	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	25.00		

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

डतण् च्तंहनद का वर्ग मूषक है तथा झीलंजप का वर्ग मार्जार है। इन दोनों वर्गों में परस्पर शत्रुता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण् च्तंहनद और झीलंजप का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण् च्तंहनद मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं राहु डतण् च्तंहनद कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

झीलंजप मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु झीलंजप कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण् च्तंहनद तथा झीलंजप में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।